Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
ISSN : 2395-7069 General Impact Factor : 2.7273, Volume 05, No. 01, January-March, 2019, pp. 157-158

बैंक और हिन्दी का सफर

डॉ. सोनाली मेहता*

भूमिका

बैंक उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता से धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती है। लोग अपनी अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने के लिए इन संस्थाओं में जमा करते हैं और जरूरत के अनुसार समय–समय पर निकालते हैं। बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों को व्यवसायिक ऋण देकर ब्याज से प्राप्त राशि से कमाते हैं।

महत्व

आधुनिक जीवन में बैंकों का महतव दिन प्रतिदिन बढता जा रहा हैं। बैंक में व्यक्ति की जमा पूंजी सुरक्षित रहती है कि जिससे एक ओर चोरी और डकैती का भय समाप्त होता है, तो दूसरी ओर बैंक में जमा पूंजी उत्पादक कार्य में राष्ट्र का विकास करने में सहायक होती है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप दुनिया की तमाम भाषाओं की भांति हिन्दी का स्वरूप क्षेत्र एवं प्रकृति में बदलाव आया और उसके प्रचार में कई गुना वृद्धि हुई है। हिन्दी पिछले कुछ वर्षों में संपर्क भाषा के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभर कर आई है। कभी ना कभी देर सबेर ही सही हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय मंडी में खडा होना ही था। बहुभाषी देश की समाज व्यवस्था वाले भारत में हिन्दी संपर्क और व्यवहार की भाषा भी इसलिए हिन्दी को वैश्विक बाजार ने अपनाया। भाषा कारोबार का माध्यम होती है यही कारण है कि विश्व के बाजार में भारत का महत्वपूर्ण स्थान मान कर दूसरे देशों ने अपने कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित किया है। उनका मुख्य उद्देश्य अपने व्यवसाय को बढाना है क्योंकि बैंकों का मुख्य ग्राहक व्यापारी वर्ग है और वो भी हिन्दी भाषी है। अतः हम हम उम्मीद कर सकते है कि बैंकों में कारोबार की शत–प्रतिशत भाषा हिन्दी अथवा आधुनिक भारतीय भाषाएं बने। बैंकिंग जैसे सेवा क्षेत्र में आम जनता की भाषा की उपयोगिता सदैव रही है। बैंकिंग सेवाएं देश के गांव–गांव व दूरदराज के क्षेत्र की जनता तक पहुंच रही है और उनकी बोलने, समझने की भाषा स्थानीय भाषा हिन्दी ही होती है, इसलिए हिन्दी भाषा आज बैंकों के लिए कारोबार की जरूरत बन गई है। इस प्रकार ग्राहकों की सेवाएं आसानी से हिन्दी के प्रयोग से पूरी की जा सकती है।

बैंकों में हिन्दी का सफर

स्थानीय भाषा और उसकी जरूरत को पूरा करने तथा ग्राहकों से सीधा संपर्क बनाने का सबसे अच्छा माध्यम विज्ञापन ही हो सकता है और जब बात विज्ञापनों की हो तो भाषा का महत्व प्रमुखता से सामने आता है। ऐसी परिस्थितियों में बैंक स्टाफ को 'लोकल लेग्वेज' का प्रशिक्षण देना

* प्रोफेसर, सेंट मेरीस सैंटनरी डिग्री कॉलेज, सैंट फ्रांसिस रोड, सिकंदराबाद, तेलंगाना।

अनिवार्य सा बन गया। बेहतर और प्रभावशाली सम्प्रेषण के प्रशिक्षण की भाषा हिन्दी – अंग्रेजी के मिले जुले रूप में सामने आई। एक अलग पारिभाषिक, मानक शब्दावली का निर्माण हो गया। अब 'चेक' को 'धनादेश' और 'बैंक' को 'कोठी' न कहकर चेक और बैंक ही स्वीकार्य हो गया। हिन्दी ने अपना दायरा बढाया और नए शब्दों के लिए शब्दकोश के द्वार खुल गए। राजभाषा हिन्दी का सरलीकरण हो गया। हिन्दी में हैंडआउट तैयार किये गए और हिन्दी में बैंकिंग पद्धति पर लिखी गई पुस्तकों की मांग बाजार में आ गई।

विभिन्न बैंकों में हिन्दी पखवाड़ा मना कर, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर हिन्दी को जानने, बोलने, लिखने और पढने की आदत को प्रोत्साहन मिला।

हिन्दी के सरलीकरण की बदौलत बैंकों में मिली–जुली भाषा सबसे लोकप्रिय है जिसमें यह स्वतंत्रता होती है कि जब चाहे हिन्दी–अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं। एक अच्छी बात हिन्दी के खाते में जाती है कि भारतीय रिजर्व बैंक मिली जुली भाषा के स्थान पर हिन्दी भाषा के प्रयोग पर ही ज्यादा जोर डालती है, उनकी रिपोर्ट में भी मिली–जुली भाषा को कोई कॉलम नहीं होता। एक तथ्य यह भी है कि इस तरह से संकाय सदस्यों को कठिनाइयों का सामना करना पडता है क्योंकि जब कोई अखिल भारतीय कार्यक्रम हो तो चर्चा केवल हिन्दी में करनी पडती है ऐसे में सम्प्रेषण की समस्या आती है। बहरहाल हम कुछ बिंदुओं की ओर विचार कर सकते हैं जिनसे हिन्दी को बैंकों में अपना पुरजोर अस्तित्व और महत्व बनाये रखने में मदद मिल सकती है–

- महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में बैंक और हिन्दी को एक साथ रखा जाए और विद्यार्थियों को राजभाषा में कार्य करने का प्रशिक्षण हिन्दी भाषा की कक्षा में दिया जाए।
- हैंडआउट को अंग्रेजी से अनुदित करने के बजाय हिन्दी में ही तैयार करने की शिक्षा दी जाए।
- जो हैंडआउट बैंक तैयार करती है उसके 'हार्डकॉपी' के अलावा उनकी सी.डी. महाविद्यालयों में भेजी जाए और उन्हें व्यवहारिक हिन्दी के रूप में पढाया जाए।
- हिन्दी 'पावर पाइन्ट प्रजेन्टेशन' का योगदान कारगर साबित हो सकता है।
- हिन्दी फॉन्ट और कनवर्टर सभी महाविद्यालयों में अनिवार्य कर दिए जाएं जिससे विद्यार्थी उन्हें सीख सकें।
- बैंकिग की भाषा शुष्क और गंभीर होती है अतः उसे रोचक बनाने का प्रयास हो।
- बैंकों द्वारा विद्यालयीन व महाविद्यालयीन स्तर पर हिन्दी व बैंक से संबंधित प्रतियोगिताऐं आयोजित की जाए जिसमें युवा वर्ग अपने नए विचार सामने लेकर आए।
- बैंकों में राजभाषा में कार्य करने वालों के लिए कोई विशेष स्कीम या भत्ता दिया जाए जिससे उनका राजभाषा के प्रति रूझान बढें।

❑❑❑